किशोरों के संवेगों पर एक अध्ययन गोरखपुर के विशेष सन्दर्भ में

संध्या शाही
शोध छात्रा – गृहविज्ञान विभाग
भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)
डॉ0 संध्या श्रीवास्तव
भगवंत विश्वविद्यालय अजमेर (राजस्थान)

सारांश :–

किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमे व्यक्ति वाल्यावस्था से परिपक्वता की और बढ़ता है इस अवस्था में ना–ना प्रकार के शारीरिक मानसिक एंव भावात्मक क्रांतिकारी परिवर्तन होते हैं। इसके साथ साथ इस अवस्था मे किशोर को व्यवहारिक जीवन में प्रवेश करने के लिए तैयारी करनी पड़ती है, अतः शिक्षको का परम कर्त्तव्य है। किशोर एवं किशोरियो की विशेषतओं से परिचित होकर उनके अनुकूल शिक्षा की व्यवस्था करें, ताकि वे ज्ञानर्जन कर अपना एवं विश्व का कल्याण कर सके। हैडो रिपोर्ट के अनुसार ग्यारह अथवा बारह वर्ष की आयु में बालक की नसों में ज्वार उठाना प्रारम्भ होता है।

प्रस्तावना :–

किशोरावस्था आँधी तूफान की अवस्था है, यहाँ आँधी तूफान से तात्पर्य संवेगात्मक उथल पुथल एंव अस्थिरता से है। किशोर बालक पल भर में आवेशित हो कर सफलता की उँची उड़ाने भरने लगता है, परन्तु जब वह असफल होता है तो निराशाओं हताशाओं की गहरी खाई मे गिर जाता है। यही कारण है कि यदि किशोर बालक अन्य प्रतियोगी परीक्षा मे बार–बार असफल हो जाता है तब वह अपना धैर्य खो देता है तथा आत्महत्या कर लेता है, इसी प्रकार किशोर बालिका भी जब अपने प्रेम प्रंसगो मे विफल हो जाती हो तब वह अपना साहस व धैर्य खो देती है, जब उनके माता–पिता इन प्रेम संबन्धों का विरोध करते है तो वे उनके विद्रोही हो जाते है तथा अधिक तंग किये जाने पर जहर की गोली खाकर आत्महत्या कर लेते है अतः सपष्ट है कि किशोरावस्था में सांवेगिक अस्थिरता बहुत अधिक होती है।

मानव विशेषताओं के दर्शन होते है वस्तुतः शैशावस्था एंव बाल्यवस्था में सम्पूर्ण जीवन की जो जैविक एंव शैक्षिक आधार शिला तैयार होती है। इसी पर किशोरावस्था में संम्पूर्ण जीवन की इमारत निर्मित होती है अतः शैक्षिक दृष्टिकोण से किशोरावस्था का सर्वाधिक महत्व है।

इस सन्दर्भ में स्टनले हाल ने ठीक लिखा है – किशोरावस्था एक नया जीवन है क्यों कि इसी में उच्चतर एंव श्रेष्ठतर मानव विशेषताओं के दर्शन होते है। वस्तुतः शैशवावस्था एंव बाल्यवस्था में सम्पूर्ण जीवन की जो जैविक एंव शैक्षिक आधारशिला तैयार होती है, उसी पर किशोरावस्था में सम्पूर्ण जीवन की इमारत निर्मित होती है। अतः शैक्षिक दृष्टिकोण से किशोरावस्था का सवार्धिक महत्व है। इसके लिए आवश्यकता इस बात कि है हम किशोरावस्था की प्रमुख विशेषताओं तथा शरीरिक मानसिक संवेगात्मक एंव सामाजिक विकास से अच्छी तरह से अवगत हो।

मानव जीवन में किशोरावस्था वह अवस्था है जो आँधी और तूफान की अवस्था है इस अवस्था में बालक कभी निराशाओं की गहरी खाई में समा जाता है। क्षण में किशोर विजयी योद्धा बनकर विश्व विजयी तिरंगा हिमालय की सबसे उँची चोटी एवरेस्ट पर फैहराते नजर आता है। तो दूसरे ही क्षण वह असफलता की गहरी घाटी में अपने आप को निसहाय पड़ा पाता है। अतः किशोरावस्था के बालक को न तो बालक कहा जाता है और न ही प्रौढ़। यह अवस्था बाल्यवस्था के अंत तथा युवावस्था के प्रारंभ के महत्व की अवस्था है। इस समय बालक जो व्यवहार करता है तो माता पिता टोकते है अब बड़े हो गये हो, बालक की भांति व्यवहार करना छोड़ दो। किशोरावस्था मानव जीवन का सबसे सुंदर एंव स्वामित अवस्था है। इस अवस्था में जीवन तरंग अपनी सर्वोच्च शिखर पर पहुंत जाता है, किशोर, किशोरियां रंग बिरंगे सपने देखते है अपने भविष्य हेतु ताना बाना बुनते है, किशोरावस्था के अंत तक किशोर किशोरियों का शारीरिक एंव मानसिक विकास पूर्ण हो जाता है। अगर एक लड़की एक स्त्री की तरह तथा लड़का एक पुरूष की भांति दिखने लगता है। शरीर भरा एंव सुंदर दिखता है, उनके चहरे पर विशेष प्रकार की रोणक एंव जादुई आर्कषण होता है, वह मंनोरंजन एंव फैशन के संसार मे डूब जाता है उसमें असीम शक्ति होती है अक्षय उर्जा का भंडार होता है, जो समुंदर की लहरो की तरह हिलोर मारते रहता है उनका आर्कषण विपरित लिंगों के प्रति बढ़ जाता है। अतः किशोरावस्था को जीवन का बसन्त कहा जाऐ तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। किशोरो के आन्तरिक शारीरिक वृद्धि एंव विकास पर यदि दृष्टिपात किया जाए तो पूर्व किशोरवास्था में लड़कियों की लंबाई लड़को की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ती है। परन्तु मासिक धर्म शुरू होने के बाद भार में वृद्धि होती है। किशोरावस्था की पूर्णता को प्राप्त करते करते लड़के लड़कियों का हद्य एंव रक्तवाहिनियों का पूर्ण विकास हो जाता है। मासिक धर्म योन अंगो की परिपक्वता संकेत करता है जिससे यह संकेत होता है कि और यह सपष्ट होता है अब उनमें प्रजनन शक्ति का विकास हो गया है तथा वह संतानोत्पत्ति की क्रिया कर सकते है, मासिक धर्म का पहली बार आना लड़कियो में घबराहट एंव चिंता उत्पन्न करता है वे यह सोचती है कि यह सब क्या हो रहा है परन्तु यदि उन्हें मासिक धर्म के बारे में पहले से ही जानकारी रहती है तब वह शिघ्रता तथा अच्छी तरह से समायोजन स्थापित कर लेते है। भारतीय संस्कृति में किशोरावस्था के बालक बालिकाओं को यौन शिक्षा नहीं दी जाती है, वे अपने दोस्तो से यौन संबध के बारे में जानकरी लेते है।

किशोरावस्था में सामाजिककरण का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है इस अवस्था के बालको का सम्पूर्ण न केवल माता पिता अथवा घर के सदस्य होते है बल्कि उनका दायरा विस्तृत हो जाता है, सामाजिक मुल्यों दर्शनों, पंरपराओं आदि को जानने समझने के साथ साथ विभिन्न लोगो की भावनाओं को समझना भी जरूरी है, जब तक वह इन मूल्यों, आर्दशों, नीतियों, नियमों, पंरपराओं को नहीं समझेगा तब तक उसके लिए सामाजिक सामजंस्य बिठाने में परेशानियां आएगी, जब किशोर समाज के लोगो के साथ तालमेल बिठा लेता है, उनकी दशाओं व प्रत्याशाओं को समझने लगते है उनके अनुरूप व्यवहार करने लग जाते है तब समझा जाता है कि किशोर में परिपक्वता आ गई है। पूर्व किशोरावस्था में बालको को विपरित लिंग के लोगो के साथ समायोजन बिठाने में कठिनाई आती है इसका प्रमुख कारण है कि अब उनका समायोजन बिठाने में कठिनाई आती है तब उनका सामाजिक दायरा विस्तृत होने लगता है बालक अपने माता पिता की बातों पर अधिक ध्यान न देकर अपने मित्रो की बातो पर ध्यान देने लग जाता है उनकी रूचि, अभिवृत्तिया, कार्य करने का तौर तरिका सभी अपने परिवार की अपेक्षा उनके मित्र मण्डली यार दोस्तो से अधिक प्रभावित होता है। किशोरावस्था जीवन का सुनहरा समय होता है, इसमें किशोर, किशोरिया बहुत सारे सपने देखते हैं।

महत्वपूर्ण बातें :–

1. किशोरो पर पढ़ने लिखने, सह शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने तथा कक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने का भार रहता है।
2. माता पिता बालक के सामने उच्च लक्ष्य रखते है, यदि बालक उन लक्ष्यों को प्राप्त करने में असफल होते है तब उन्हें समायोजन संबधी परेशानी होती है।
3. किशोरो में सांवेगिक अस्थिरता अधिक होती है, इस कारण भी उन्हें समायोजन में कठिनाई आती है।
4. आजकल की भागदौड़ भरी जिन्दगी में धनोपार्जन की उत्कृष्ट लालसा आदि कारणो से भी किशोरों को समायोजन में कठिनाई आती है।
5. गलत आदतों अभयास होना जैसे धुम्रपान, शराब, पान, गुटखा–तम्बाकू आदि।

निष्कर्ष –

उपरोक्त शब्दों में हमने किशोरावस्था की विशेषताओं तथा किशोरो के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों के विकास पर प्रकाश डालते हुए देखा है कि किस प्रकार यह जीवन का सबसे कठिन काल

है। इस अवस्था में किशोरों में ऐसे शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एंव सामाजिक परिवर्तन होते हैं, जिसके कारण वह अच्छा बुरा, देशप्रेमी व देशद्रोही, शिष्ट व अशिष्ट, सामाजिक व असामाजिक कुछ भी बन सकता है ऐसी स्थिती में किशोरों को उचित मार्गदर्शन तथा शिक्षा की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

- Argyle, M. 2001. The Psychology of happiness (Second Ed.) New York: Taylor & Francies.
- Arnold, M.B. (1960). Emotion and Personality. New York: Columbia University press.
- Ary, D.V., Duncan, S.C. Hops. H. (1999). Adolescent problem behavior: The influence of parents and peers. Behavior Research and Therapy, 37,217-230.
- Being, Interna Resource, and Pare pntal Factors. Journal of Youth and Adolescence, 32(2), 67-79.
- Ben-Zur, H. (2003). Coping, affect and aging: The roles of mastery and self-esteem. Personality and individual defferences, 32,357-372.
- Ben- Zur, H. (2003). Happy Adolescents: The Link Between subjective Well.
- Bodenhausen, G.P., & Su seer, k. (1994). Happiness and steroeotypic thinking in social Judgement. Journal of personality and Social Psychology, 66,621-632.
- Call, K.T. Riede, A.A., Hein, K. Mcloyd, V., Petersen, A., & Kiple, M. (2002)
- Carr. A. (2004). Positive psychology: The Science of Happiness and Human Strengths. Rutlege, East, Sussex.
- Chaturvedi, supriya (2010) title of paper Understanding various facets of emotional lab our in organizations paper presented in U.G.C. National Seminar on Human Emotions and Wello Being.